NATIONAL SCHOOL OF DRAMA
REPERTORY COMPANY PRESENTS

S. H. VATSYAYAN 'AJNEYA'S NOVEL

APNE APNE AJNABI

IN HINDI

DEVENDRA RAJ ANKUR

STUDIO THEATRE
RABINDRA BHAWAN (BELVEDERE
MANDAVI MARG
NEW DELHI 110001
PHONE 383401

9, 10 DEC. 1989 — 3 P.M., 6.30 P.M.
11 DEC. 1989 — 6.30 P.M.

अपने अपने अजनबी

'अज्ञेय'

अपने-अपने अजनबी

कहीं भी वरण की स्वतंत्रता नहीं है

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय-रंगमंडल ने पिछले दिनों कहानी रंगमंच के प्रेरक-निर्देशक देवेंद्र राज अंकुर के निर्देशन में स. ही. वात्स्यायन 'अज्ञेय' के उपन्यास पर आधारित प्रस्तुति 'अपने-अपने अजनबी' का यादगार मंचन किया. अकेलेपन की त्रासदी को अभिनेत्री हेमा सिंह ने अपने संवेदनशील अभिनय और सूक्ष्म भावाभिव्यक्ति से जीवंत किया. यह एक रोचक तथ्य है कि गये वर्षों में हेमा ने अपनी कद-काठी से ऊपर उठकर रंगमंडल की प्रमुख प्रस्तुतियां 'मशरिकी हूर', 'सूर्य की अंतिम किरण....', 'नौकर शैतान मालिक हैरान' आदि नाटकों में प्रमुख नायिका के रूप में अपनी अभिनय प्रतिभा की विशेष छाप छोड़ी.

'अपने-अपने अजनबी' के माध्यम से निर्देशक अंकुर ने भी 'कहानी के रंगमंच' की मूल अवधारणाओं से हटकर एक नयी दिशा पकड़ी. १९७६ में अंकुर का यह मानना था, 'मैं कहानी के नाटकीकरण के पक्ष में नहीं हूं, वरन् कहानी के मूल में निहित कथ्य, शब्द और दृश्य को ही मंच पर प्रस्तुत करना मेरा ध्येय है. दर्शकों को देखते हुए भी कहानी सुनने या पढ़ने की अनुभूति मिले.'

बकौल अंकुर 'अपने-अपने अजनबी' की यह प्रस्तुति अन्य कहानियों - उपन्यासों के मंचन की दृष्टि से सर्वथा भिन्न है और एक नये किस्म का रंगानुभव है. इस प्रस्तुति में उपन्यास का आलेख अपने मूल रूप में होते हुए भी काफी बदल गया है, बल्कि यों कहना चाहिये कि प्रस्तुति ने एक नये मंच-आलेख को जन्म दिया जिसमें पांच पात्र अपने-अपने ढंग से मृत्यु, अकेलेपन और अजनबीपन से साक्षात्कार करते हुए अपने-आपको पहचानते हुए इस मूल तत्व से साक्षात्कार करते हैं कि 'कहीं भी वरण की स्वतंत्रता नहीं है.' न तो जीवन में और न ही मृत्यु में.

रंगमंच: भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण का सार्थक हस्तक्षेप

औरत अपने अस्तित्व की लड़ाई इस सत्ता के विरुद्ध कैसे लड़े

ऊपर : 'पीकर ज़ैतून मालिक हैरान' नाटक में प्रवेश अग्रवाल एवं रघुवीर यादव. दाएं : अज़ेय कुमार 'अपने-अपने अजनबी' में देवा सिंह.

आनंद गुप्त

भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण का सांस्कृतिक अनुष्ठान अब मात्र दिखावटाना के लिए कृत्य-संगीत की महफ़िलें सजाने, कलाकारों के लिये फिल्मों के प्रदर्शन और लोकप्रिय नाटकों के मंचन तक ही सीमित नहीं रह गया है बल्कि विचार प्रधान-प्रयोगशील प्रस्तुतियों के मंचन व पोषण की ओर भी अग्रसर हो रहा है. पिछले दिनों साहुकलम थियेटर, इमारत पैलेस में आयोजित, नारी-मुक्ति पर केंद्रित-ए-डिकोट सहस' नाट्य समारोह इस दिशा में एक नयी पहल है.

यह उल्लेखनीय है कि मार्च १९८४ में संजय थियेटर इमारत पैलेस के 'अम्बापाली रंगमंच' से प्रारंभ 'अखिल भारतीय नाटक समारोह' की परम्परा-एक स्थायी आकर्षण का दर्शकों और प्रतिबद्ध रंगकर्मियों को सम्मान रूप से पोषण और प्रोत्साहन दे रही है. प्राधिकरण के अथक उत्साह से हमारे आयोजकों को बल मिला है. सभी खुशी है यहां के नाटकों में नारी हालात के पारम्परिक ढांचों से हट कर कुछ नये और ऐसे दर्शक आगे आ रहे हैं जो घिसा-घिसा सी नाटक देखने जाते हैं.

गत पांच-छह वर्षों में देश की विभिन्न भाषाओं की लगभग सभी श्रेष्ठ प्रस्तुतियों का यहां मंचन हो चुका है. राजधानी के सांस्कृतिक मंच पर भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण एक ऐसे कला प्रशासक – प्रशासक संरक्षक के रूप में उभरकर सामने आया है जो अपने आर्थिक अनुदान और सूझे आयोजनों से कलाकारों और कलाप्रेमी दर्शकों-श्रोताओं को एक साथ लाकर विकसित कर रहा है. गत २७ से ३० दिसंबर ८९ तक आयोजित 'ए डिकोट सहस' नाट्यसमारोह में नारी पर केंद्रित पांच प्रस्तुतियां- 'माया' (रंगकर्मी, कलकत्ता) 'मीन क्लाम ए मीनिन' (द मेरेथन, मद्रास), 'एक अकेली-एक सुबह' (नाटक के बाद), 'कांटे के-कांटे के' (थियेटर यूनियन, नयी दिल्ली) तथा 'मुक्ति' (अनामिका, नयी दिल्ली) का मंचन हुआ जिनका निर्देशन क्रमशः **उषा गांगुली, भारतीय नारायण, अनुप त्रिपाठी, कमलेश कुलश्रेष्ठ** और **विमुक्ती शर्मा** ने किया. कुल मिलाकर इस समारोह ने नारी के आत्मसंघर्ष को रोचकता और संवेदनशीलता के साथ आज की सारी प्रस्तुतियों का यह मंचन हो चुका है. राजधानी के सांस्कृतिक मंच पर भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण एक ऐसे कला प्रशासक – प्रशासक संरक्षक के रूप में उभरकर सामने आया है जो अपने आर्थिक अनुदान और सूझे आयोजनों से कलाकारों और कलाप्रेमी दर्शकों-श्रोताओं को एक साथ लाकर विकसित कर रहा है.

मात्र २७ से ३० दिसंबर ८९ तक आयोजित 'ए डिकोट सहस' नाट्यसमारोह में नारी पर केंद्रित पांच प्रस्तुतियां- 'माया' (रंगकर्मी, कलकत्ता) 'मीन क्लाम ए मीनिन' (द मेरेथन, मद्रास), 'एक अकेली-एक सुबह' (नाटक के बाद), 'कांटे के-कांटे के' (थियेटर यूनियन, नयी दिल्ली) तथा 'मुक्ति' (अनामिका, नयी दिल्ली) का मंचन हुआ जिनका निर्देशन क्रमशः **उषा गांगुली, भारतीय नारायण, अनुप त्रिपाठी, कमलेश कुलश्रेष्ठ** और **विमुक्ती शर्मा** ने किया. कुल मिलाकर इस समारोह ने नारी के आत्मसंघर्ष को रोचकता और संवेदनशीलता के साथ आज की सारी प्रस्तुतियों का यह मंचन हो चुका है. राजधानी के सांस्कृतिक मंच पर भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण एक ऐसे कला प्रशासक – प्रशासक संरक्षक के रूप में उभरकर सामने आया है जो अपने आर्थिक अनुदान और सूझे आयोजनों से कलाकारों और कलाप्रेमी दर्शकों-श्रोताओं को एक साथ लाकर विकसित कर रहा है. गत